

अङ्गे अङ्गे वि बभूवत् (wohl setze sich fest) TS. 1,3,10,1; vgl. VS. 6,20.

— अधिन 1) *niederlegen* —, *auflegen auf*: नि धेहि गोर्धं त्वि Rv. 1,28,9. कुरीरेमस्य शीर्षण्यधिनर्द्धमसि AV. 6,138,2. द्योर्ह्येतत्तीयं कृदिरधिनधीयते Ait. Br. 1,29. Cat. Br. 3,5,3,9. 6,1,6. 9,3,3. 11,4,3,2. — 2) *Jmd verleihen*: अस्मे सौम श्रियमधि नि धेहि Rv. 1,43,7. 72,10. Cat. Br. 13,2,3,3. द्युम्नम् Rv. 1,73,4. प्रज्ञा त्वष्टरधिनर्द्धेह्यस्मे AV. 2,29,2.

— अधनि 1) *bei Seite legen*; *auf die Seite schaffen*, *verbergen*: अष्टं पुत्रमप न्यधत् TBr. 1,5,3,1. ते शिरष्किञ्चान्यत्रापनिधास्यावः Cat. Br. 14,1,1,23. 3,9,4,22. 5,1,4,10. Kāṭh. 24,7. *bei Seite setzen* Cat. Br. 4,3,3,8. — 2) *beseitigen*, *vertreiben*: अप त्वयद्मं नि र्द्धमसि AV. 8,1,21. 14,2,69. — Vgl. अनपनिक्तम्.

— अभिनि 1) *auflegen*: यथा शीर्षे गरमभिनिध्यात् Cat. Br. 11,5,3,6. med. *sich* (dat.) *auflegen*: गुरु भारमभिनिधत्ते Ait. Br. 4,13. — 2) *berühren*, *nahe kommen*: क्षुरेणभिनिध्याति Cat. Br. 3,1,2,7. अस्मिना 8,3,12. 13,4,1,22. 1,3,4,12. दत्तिणं कर्णमभिनिधाय वाग्वागिति त्रिः (den Mund) *nahe an das Ohr* (des Kindes) *bringend* 14,9,4,25. मूर्धन्मभिनिधायाम्नावयति 4,4,3,9. Kāṭh. 2,8,2. 6,6,9. Gobh. 2,9,11. Kauç. 33.86. partic. अभिनिक्त *berührt*: अभिनिक्त एव सध्येन पाणिना भवति Cat. Br. 1,3,4,12. अनभिनिक्तो वै पुरुषो ऽनेन च प्राणेन च *sich nicht berührend mit* 7,4,3,9. *der nahegerückte, berührende heisst der Saṃdhi, welcher eintritt bei der Verschmelzung eines anlautenden अ mit einem vorangehenden ए, ओ, und der auf einer solchen Silbe* (urspr. wohl diphthongisch ea, oa gesprochen) *ruhende Ton*, Rv. Prāt. 2,13. 3,7. 10. 19.13.10. VS. Prāt. 1,114.123. AV. Prāt. 3,54. Taitt. Prāt. 2,8. Çāṇkh. 12,13,5 in Ind. St. 4,230. Die unter अभिनिधान 2. gegebene Erklärung ist zu verbessern: *Annäherung* (der Laute in der Aussprache, im Unterschied von unmittelbarer Verbindung, संयोग). एते च द्वैपदा यथागृहीतमभिनिधीयते *unterliegen dem abhinihita genannten Saṃdhi* Schol. zu Rv. Prāt. 2,19. Schol. zu VS. Prāt. 4,61 in Ind. St. 4,230. Von den Sparça heisst es Kūāṇḍ. Up. 2,22,5: *लेशेनाभिनिहिता* (lies mit dem Schol. *लेशेनानभि*) *वक्तव्याः*; vgl. dazu अभिनिधान Rv. Prāt. 6,5. 9. 11. 12.

— उपनि 1) *daneben setzen*, — *stellen*: वेदै परिधोश्च शकलेशोपनिर्द्धारत Cat. Br. 2,5,3,5. 3,7,1,3. 3,1. Pañkāv. Br. 21,2,9. नव शरावे शमीपर्णानि चोपनिहितानि भवन्ति Āçv. Gṛh. 1,7. med.: द्वाडम् Gobh. 4,9,11. *Jmd* (eine Speise u. s. w.) *vorsetzen*: यथान्यस्मा उपान्धार्य । अन्यस्मै प्रयच्छति *wie wenn er dem Einen vorsetzt, dem Andern wirklich giebt* TBr. 2,1,3,6. यथा यस्मा अशनमाहरेत्तस्मा आकृत्यैवोपनिर्द्धार्य तत् Cat. Br. 2,3,1,17. नेतो ऽन्ये (कुत्साषाः) *विद्यते यच्च ये म इम उपनिहिताः* Kūāṇḍ. Up. 1,10,2. med. Lāṭṣ. 4,11,17. *nähern*: कर्णायोरुपनिधाय (seinen Mund) मेधा जननं जपति Āçv. Gṛh. 1,15 (vgl. अभिनि). *herbeiführen*, *herbeibringen*: वक्तु मलयसमोरे मदनमुपनिधाय Git. 5,2. — 2) *herbeiführen*, *bewirken*: भयमुपनिधे स रातसानाम् *jayte* *Furcht ein* BHATT. 4,45. — 3) *verwahren*, *vergraben* (einen Schatz); *zur Verwahrung übergeben*, *anvertrauen*: ब्राह्मणो दृष्ट्वा पूर्वोपनिक्तं निधिम् M. 8,37. *निक्षिप्तस्य धनस्यैवं प्रीत्योपनिक्षिप्तस्य च* 196. (आत्मजम्) *ब्राह्मणोपनिधाय* Bhāg. P. 5,4,5. — Vgl. उपनिधातृ fgg.

— परिणि P. 8,4,17. Sch. *herumlegen*: यदिमान् (परिश्चितः) पर्येव दधाति Cat. Br. 9,4,3,9. परिनिधाय Kāṭh. 2,8,13.

— प्राणि P. 8,4,17. Sch. Vop. 8,22. 10,11. 1) *Jmd voranstellen*, *vorangehen lassen*: त्वं वयं तात संयुगे । प्राणिधायानुयास्यामः MBh. 7,1527. — 2) *niederlegen*: (घ्नन्) प्राणिधाय शमोमूले MBh. 4,1437. निर्व्याण प्राणिधीयते P. 6,2,178. Sch. *तस्मात्प्राणस्य प्राणिधाय कार्यं प्रसादये त्वाम्* Bhāg. 11,44. *aufsetzen*, *auflegen* (प्राणिहित = निहित, न्यस्त H. an. 4,114. Med. t. 206.): यद्वाःपु मा प्राणिहितम् Bhāg. P. 1,15,16. वर्ति प्राणिध्यात् Suçr. 1,16,8. *ansetzen*, *anlegen*: तिर्यक्प्राणिहिते शस्त्रे 95,16. *hineinstecken in* so v. a. *einfassen in*: यदि मणिस्त्रपुणि प्राणिधीयते (प्रतिबध्यते Pañkāt.) Hit. II,71. *bringen in*, *versetzen in*: यथा मो त्वं पुनर्नैवं दुःखेषु प्राणिधास्यसि MBh. 12,6617. वेदप्राणिहितो धर्मः so v. a. *enthalten in*, *gelehrt in* Bhāg. P. 6,1,40. — 3) *ausstrecken*: मामाकाशप्राणिहितभुजं निर्दयान्नेपेक्षितोः Megh. 103. नीवो प्रति प्राणिहिते तु कोरे प्रियेण Sāh. D. 42,1. — 4) *berühren*: वक्त्रेण वक्त्रं प्राणिधाय शब्दं चकार MBh. 3,10062. — 5) (seine Augen, seinen Sinn) *richten auf*: कुक्षप्राणिहिते तणाः Hariv. 4089. तत्र प्राणिहितधियाम् Bhāṭṭ. 1,51. वेदात्तप्राणिहितधियाम् 52. प्राणिधाय मनो हृदि Bhāg. P. 1,6,20. किञ्चिन्ध्याद्रिगुहं गतुं मनः प्राणिदधे द्रुतम् *beschloss* BHATT. 6,142. आत्मानं न प्रतिदधत् *seinen Geist nicht auf einen Punkt richtend* Çāṇk. zu Brh. 4. Up. p. 239. नान्यत्र युद्धाच्छ्रेयो ऽस्ति तथात्मा प्राणिधीयताम् MBh. 4,1489. बुद्धिः प्राणिहिता येन मनश्चानुसमाहितम् R. 2,22,14. भक्तियोगेन मनसि सम्यक्प्राणिहिते ऽमले Bhāg. P. 1,7,4. Mit Ergänzung von मनस् u. s. w. *alle seine Gedanken* —, *seine ganze Aufmerksamkeit auf Etwas richten*: तस्मात्त्रितयं परीक्षितं पुरुषानुप्राणिधाय वै MBh. 13,2190. Hariv. 6621. R. 4,27,21. प्राणिहित *der seine Aufmerksamkeit auf einen Punkt gerichtet hat*, = समाहित H. an. Med. माम् । विद्धि प्राणिहितं धर्मे तापसं वनगोचरम् R. 2,50,30 (Gorr. 47,21). प्राणिहितः स्वार्थे BHATT. 9,99. — 6) *aussenden* (Spione; vgl. प्राणिधि); *spionieren*: धार्तराष्ट्रस्य शिविरं मया प्राणिहिताश्चराः MBh. 7,2631. 5,132. अमात्येषु च सर्वेषु मित्रेषु विविधेषु च । पुत्रेषु च महाराज प्राणिध्यातसमाहितः ॥ 12.2604. प्राणिधाय हि चोरेण ततो भावः परीक्ष्यताम् R. 5,90,15. प्राणिहित *viell. ausgesundschaftet, durch Spione bekannt geworden*: सम्यक्प्राणिहितं (nach Kull. = प्रतिज्ञातं) चार्थं पृष्टः सन्नाभिनन्दति M. 8,54. ये तत्र नोपसर्पयुर्मूलप्राणिहिताश्च ये (nach Kull. = राजनियुक्तपुराणचौरवर्गं सावधानभूताः) 9,269. — 7) प्राणिहित = प्राप्त, संप्राप्त *erlangt* AK. 3,2,36. H. an. Med. Dunkel ist die Bed. des Wortes in der Stelle: *ग्रन्थतानिमित्ताप्राणिहितं सर्वम्* SADDH. P. 4,5, a. BURNOUF übersetzt: *l'état de vide, l'absence de toute cause, l'absence de tout objet*. — Vgl. प्राणिधान, ऽधि, ऽधेय.

— संप्राणि *zurücklassen*: ग्रन्थे संप्राणिधाय माम् MBh. 4,1247. *beseitigen*. *unbeachtet lassen*: तवैवाज्ञां संप्राणिधाय सर्वाम् 3,13194.

— प्रतिनि 1) *an die Stelle eines Andern setzen*, *unterschieben*, *substituieren*: इत्ये ऽविद्यमाने यत्सामान्यतमं मन्येत तत्प्रतिनिध्यात् Çāṇkh. 12,10. 13,3,2. Kauç. 87. Kāṭh. 2,25,14,29. Nir. 12,10. Çāṇk. zu Ait. Up. 4,4. — 2) *verfügen*, *befehlen*: तथा प्रतिनिधाय MBh. 1,4505. — Statt गुणाश्रयविशेषं प्रतिनिधाय bei GAUPAR. zu Sāṃkhya. 16 ist zu lesen ऽशेषं प्रति निधाय. — Vgl. प्रतिनिधि.

— विनि 1) *weglegen an verschiedene Orte*, *vertheilen*: तदासौ पाप्म-